इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित लिपिविज्ञान एवं पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण।

(दिनांक 31 दिसम्बर 2018 – 21 जनवरी 2019)

पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला का उद्घाटन काशी के प्रसिद्ध संगीतशास्त्री प्रोफेसर चित्तरंजन ज्योतिषी जी की अध्यक्षता में तथा प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी जी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस कार्यशाला में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के सदाशिव परिसर, पुरी, पंजाब, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, संम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में पाण्डुलिपिविज्ञान, सम्पादन के सिद्धान्त एवं प्रविधि के साथ–साथ ओडिआ एवं मलयालम लिपि का अभ्यास कराया गया। इसके लिए विषय विशेषज्ञ के रूप में देश के प्रतिष्ठित आचार्यों के साथ–साथ ओडिआ लिपि के प्रशिक्षण के लिये प्रोफेसर ब्रज किशोर स्वाइँ, पूर्व आचार्य, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,पुरी तथा मलयालम लिपि के प्रशिक्षण हेतु श्री पी0 एल0 षाजि, पूर्व वरिष्ठ पाण्डुलिपि अधिकारी, ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट एवं पाण्डुलिपि संग्रहालय, करियावेट्टम् परिसर, तिरुवनन्तपुरम्, केरल, को आमत्रित किया गया।

इस 21 दिवसीय कार्यशाला में देश के भिन्न–भिन्न विश्वविद्यालयों से आमन्त्रित किये गये 22 विद्वानों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यशाला में कुल 41 सत्र संचालित हुए।

परिचय सत्र के बाद पहला व्याख्यान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के निदेशक डॉ0 विजय शंकर शुक्ल जी का हुआ। डॉ0 शुक्ल जी साहित्यिक सन्दर्भों के आलोक में लेखन कला एवं सामग्री का इतिहास, पाण्डुलिपियों पर कार्य करने की सम्भावना तथा पाण्डुलिपि सर्वेक्षण विषयक चार व्याख्यान प्रस्तुत किये। कहाँ–कहाँ पाण्डुलिपियों का भण्डार सुरक्षित है, पाण्डुलिपियों के कैट्लाग कहाँ–कहाँ से प्रकाशित हैं, उसका उल्लेख किया जो प्रतिभागियों के लिए अनुसन्धान की दृष्टि से अत्यन्त ही उपयोगी रहा।

ओडिआ लिपि के प्रशिक्षण हेतु विषय विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित प्रोफेसर ब्रजकिशोर स्वाइँ ने तार्किक ढ़ंग से भगवान् जगन्नाथ जी के अवयवों, विशेषकर नेत्र–युगलों से ओडिआ लिपि की विकास पथ को रेखांकित किया और कहा कि ओडिआ लिपि पर दक्षिण का एवं भाषा पर उत्तर का प्रभाव प्रतीत होता है। उन्होंने यह उल्लेख किया कि किस प्रकार पाश्चात्य नाविक केरी महोदय के प्रयास स्वरूप सर्वप्रथम श्रीरामपुर में मुद्रण यन्त्र स्थापित हुआ।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रोफेसर महेश्वरी प्रसाद जी तीन व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने अशोककालीन ब्राह्मी से लेकर मौर्योत्तर कालीन, गुप्तकालीन, कुषाणकालीन ब्राह्मी के स्वरूप को चित्रित करते हुए ब्राह्मी लिपि का अभ्यास भी कराया।

श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, सम्प्रति संम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, पुराणेतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर गंगाधर पण्डा जी ने अपने दो व्याख्यानों में पाण्डुलिपियों के सम्पादन में प्रयुक्त होनेवाले तकनिकी शब्दावलियों तथा ओडिशा में उपलब्ध ताडपत्र पाण्डुलिपियों के विषय में प्रतिभागियों को अवगत कराया।

का0हि0वि0वि के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रो0 सीताराम दुबे ने तीन व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो0 दुबे जी ने ब्राह्मी लिपि के उत्पत्ति से सम्बन्धित स्वदेशी सिद्धान्त एवं विदेशी सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए ब्राह्मी लिपि के भिन्न भिन्न स्वरूप तथा काल विशेष में लिपिकार के कारण किस प्रकार लिपि की शैली में परिवर्तन हुआ, पूर्वी शैली, पश्चिमी शैली, डेकनी शैली आदि का तथा भिन्न भिन्न काल में प्रयुक्त सिक्कों के विषय में उल्लेख करते हुए उसमें लिखित लिपि का भी अभ्यास कराया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग, कला संकाय आचार्य तथा भारत अध्ययन केन्द्र के समन्वयक प्रो0 सदाशिव कु द्विवेदी जी ने पाण्डुलिपियों के वंशवृक्षों का निर्माण कैसे करना चाहिए उस विषय में प्रतिभागियों को अवगत कराया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय, बौद्ध एवं जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो0 प्रद्युम्न शाह जी ने **श्वेताम्बर आगमशास्त्र का सृजन और विकास तथा पाण्डुलिपि विज्ञान** विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के यशस्वी निदेशक डॉ0 श्रीप्रकाश पाण्डेय जी ने जैन पाण्डुलिपियों की उपलब्धता पर विस्तार से चर्चा की।

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परियोजना समन्वयक डॉ0 नरेन्द्र दत्त तिवारी ने नेवारी लिपि के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालते हुए नेवारी लिपि का वर्ण परिचय भी कराया।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, संस्कृत विभाग, के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 प्रभुनाथ द्विवेदी जी ने अपने व्याख्यानों में पाण्डुलिपियों की विशेषताओं को दर्शाते हुए उनके निर्माण, आधार, प्रकार, लेखन शैली की दृष्टि तथा रूप विधान की दृष्टि में सूक्ष्माक्षर, स्थूलाक्षर, वक्राक्षर, रजताक्षर, स्वर्णाक्षर आदि का उल्लेख किया तथा क्षेत्र विशेष के साथ साथ ही आपने सम्पादन में प्रुफ संशोधन हेतु प्रयुक्त होने वाले सांकेतिक चिह्नों का भी उल्लेख किया। प्रोफेसर दुबे जी द्वारा लाया गया ताबिजी पाण्डुलिपि तथा स्व–हस्तलिखित 9 पाण्डुलिपियों को प्रतिभागियों ने देखा।

मलयालम लिपि के अभ्यास हेतु विषय विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित विद्वान् श्री पी0एल0 षाजि ने दिनांक 11 जनवरी से 21 जनवरी तक मलयालम लिपि का अभ्यास कराया। उनके सरल–स्वभाव, व्यक्तित्व एवं लिपि सिखाने की लालसा ने प्रतिभागियों का आकृष्ट किया। उपस्थापन, प्रयोग एवं अभ्यास इन तीनों बिन्दु को ध्यान में रखते हुए श्री षाजि ने कठिन परिश्रम से, प्रतिभागियों के ग्रहण सामर्थ्य के अनुसार ही अध्यापन करते हुए प्रतिभागियों को मलयालम लिपि लिखने एवं पढ़ने में समर्थ बनाया। इसके साथ ही श्री षाजि ने अनेक ताडपत्र पाण्डुलिपियों को प्रतिभिागियों के सम्मुख रखा, उनसे परिचित कराया तथा स्टाइलस से कैसे लिखा जाता है, उसका प्रयोग कर भी दिखाया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैन एवं बौद्ध दर्शन विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रो0 फूलचन्द जैन ने प्राकृत गाथाओं के सम्पादन के सिद्धान्त पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कल्याणी विश्वविद्यालय कोलकाता से आमन्त्रित विद्वान् डॉ0 सोमनाथ सरकार ने चार व्याख्यानों में अपने व्याख्यानों में पाण्डुलिपियों का कालनिर्धारण कैसे करना चाहिए, काल निर्धारण के समय क्या सतर्कता बरतनी चाहिए तथा भिन्न–भिन्न सम्वत्सरों का निर्धारण कैसे करें ? इन सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा की तथा उसका अभ्यास भी कराया।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के गंगानाथ झा परिसर से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर राम किशोर झा जी ने दो व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो0 झा जी ने पाण्डुलिपियों के सम्पादन के क्षेत्र में अर्जित अपने षड्रस मिश्रित अनुभव को अत्यन्त ही रोचक ढंग से पौराणिक आख्यानों के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा साथ–साथ पुरानी देवनागरी लिपि के पठन में आ रहे कठिनाइयों को दूर करने के लिए उसका अभ्यास भी कराया ।

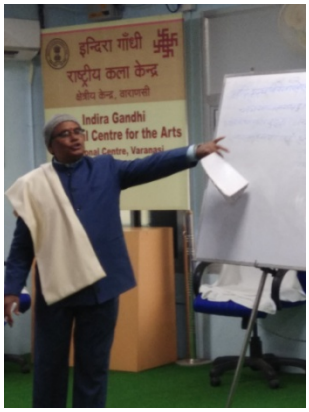

एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी, अहमदाबाद के निदेशक प्रोफेसर जितेन्द्र भाई साह जी ने अपने व्याख्यानों में पाण्डुलिपियों के भण्डार, का उल्लेख करते हुए कहा कि न केवल जैन ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां अपितु आयुर्वद, ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्रों की पाण्डुलिपियां भी जैन ग्रन्थागारों में सुरक्षित हैं। जैन आगमों की सम्पादन विधि का उल्लेख करते हुए पतित पाठ एवं वृद्धि पाठ की परम्परा की प्रचलन पर भी प्रकाश डाला।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के आचार्य प्रो भगवत् शरण शुक्ल ने व्याकरण में अनुसन्धान पद्धति, व्याख्यान पद्धति एवं लिपि के इतिहास पर विस्तार से चर्चा की।

कोलकाता विश्वविद्यालय से आमन्त्रित विदुषी प्रोफेसर रत्ना बसु जी ने चार उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। पाठसम्पादन में उच्चत्तर समीक्षा, निम्नतर समीक्षा तथा कैसे सम्पादन कार्य करना चाहिए, बौद्ध ग्रन्थों के सम्पादन में क्या कठिनाईयां हैं उन पर विस्तार से चर्चा की।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, जैन एवं बौद्ध दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर कमलेश कुमार जैन ने जैन पाण्डुलिपियों का उल्लेख करते हुए श्रुति–परम्परा से लिखित परम्परा के प्रचलन तक के इतिहास को रेखांकित करते हुए इस पर प्रकाश डाला कि जैन आचार्यो ने परम्परा के संरक्षण हेतु कैसे छात्र तैयार करते थे।

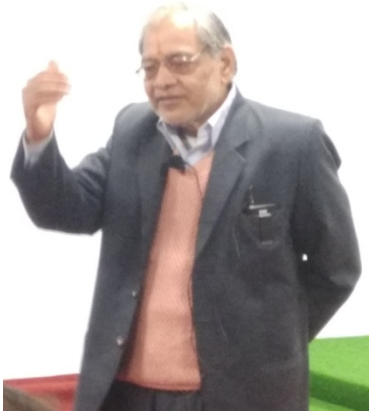

काशी हिन्दू विश्वविद्याल, कला संकाय, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 जयशंकर लाल त्रिपाठी गुरुजी, 'भाषा के विकास में व्याकरणशास्त्रियों का योगदान' विषय पर अत्यन्त ही उपयोगी व्याख्यान देते हुए कहा की व्याकरण शास्त्र कभी भी भाषा की सीमा को संकुचित नहीं किया है भाषा को समृद्ध किया है परिष्कृत किया है। इसीलिए संस्कृत को किसी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं मानी जाती।

भारतीय विद्या के सम्वर्धन में निरन्तर तत्पर सनातन कवि महामहोपाध्याय पण्डित रेवा प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि लिपिकार या लेखक की गलती को कवि की गलती नहीं माननी चाहिए, अधिकपाठ मिलना दोष है अतः भाषा की अशुद्धि पर ध्यान देना चाहिए। उनके अनुसार प्राचीन काल में लिखे गये पाण्डुलिपियाँ जितनी महत्त्वपूर्ण है अर्वाचीन विद्वानों द्वारा लिखी गयी कृतियाँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं अतः उनको भी पाण्डुलिपि मानना चाहिए।

गुजरात से आमन्त्रित विद्वान् डॉ0 कनैयालाल पुरोहित जी ने गुजरात में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का भाण्डार विशेष कर वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र की पाण्डुलिपियों पर विस्तार से चर्चा की।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, संस्कृत विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रो0 राममूर्ति चतुर्वेदी जी ने वैदिक ग्रन्थों के सम्पादन के सन्दर्भ में विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने वेद, वेदाङ्ग, आरण्यक तथा उपनिषदों के सम्पादन के समय क्या सतर्कता वरतनी चाहिए एवं किन–किन बिन्दु पर ध्यान देना चाहिए उन पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला का समापन सत्र दिनांक 21 जनवरी 2019 को क्षेत्रीय केन्द्र के संगोष्ठी कक्ष में गुजरात विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर हिमांशु पाण्ड्या जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर जय शंकर लाल त्रिपाठी जी मुख्य अतिथि एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ के सचिव श्री इन्द्रभूति बरड़ जी ने विशिष्ट अतिथि पद को अलंकृत किया।

इस कार्यशाला के समापन सत्र में प्रोफेसर युगल किशोर मिश्र, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य प्रोफेसर गोपाल रेड्डी, गुजरात विश्वविद्यालय के कार्यकारिणी सदस्य डॉ नीरजा गुप्ता, प्रोफेसर प्रद्युम्न शाह, प्रोफेसर कमलेश कुमार जैन, प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी, डॉ0 कनुभाई पुरोहित, श्री पी0एल0 षाजि, प्रोफेसर सुमन जैन, डॉ0 श्रीप्रकाश पाण्डेय, डॉ0 ओमप्रकाश सिंह आदि अनेक विद्वान् उपस्थित रहे।

इस कार्यशाला में 30 प्रतिभागियों ने नियमित रूप से उपस्थित होकर पाण्डुलिपिविज्ञान, सम्पादन के सिद्धान्त एवं प्रविधियों के बारिकियों को समझा तथा ओडिआ एवं मलयालम लिपि का विधिवत् अभ्यास किया। क्षेत्रीय निदेशक, डॉ विजय शकर शुक्ल जी के मार्गदर्शन में कार्यशाला की संयोजन का कार्य डॉ0 त्रिलोचन प्रधान ने किया।